

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 14 — ब्रह्मा की स्तुति

5 October 2026



अपना अभिमान विसर्जित कर चतुर्मुख ब्रह्मा हाथ जोड़े खड़े होकर नन्दे ग्वाल कृष्ण को समर्पण की स्तुति अर्पित करते हैं — वही परम ब्रह्म जो नन्द के लाला रूप में क्रीड़ा कर रहे हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्कटम् में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध का यह चौदहवाँ अध्याय स्तुति की एक माला है। बालक-प्रभु को परखने के प्रयास के पश्चात् असंख्य विष्णुओं के दर्शन से विनम्र हुए स्रष्टा ब्रह्मा समस्त शास्त्रों की सबसे प्रिय स्तुतियों में से एक उँडेल देते हैं। वे अपनी भूल स्वीकार करते हैं, शुष्क ज्ञान से ऊपर प्रेममयी भक्ति को श्रेष्ठ बताते हैं, ब्रज के उन गोपों के सौभाग्य पर विस्मित होते हैं जिनके मित्र स्वयं परम ब्रह्म हैं, और केवल यही माँगते हैं कि किसी भी योनि में, प्रभु के चरणों की सेवा करने वाले भक्तों के बीच जन्म लें। स्तुति अर्पित कर ब्रह्मा प्रस्थान कर जाते हैं; कृष्ण अपने प्रतीक्षारत साथियों के पास लौटते हैं, जिन्हें पूरा वर्ष आधा क्षण मात्र लगा; और शुक्रदेवजी अन्त में समझाते हैं कि ब्रजवासी इस बालक को, जो दूसरे का पुत्र था, अपने बालकों से भी अधिक क्यों प्रेम करते थे — क्योंकि वे ही समस्त के आत्मा हैं।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 14 (चतुर्दश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: ब्रह्मा की स्तुति
- मुख्य वक्ता: ब्रह्मा (अपनी स्तुति में); श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: भगवान् कृष्ण; राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: व्रज में वृन्दावन के चरागाह और यमुना का तट
- केंद्रीय विषय: ब्रह्मा की स्तुति और समर्पण; प्रेममयी भक्ति की श्रेष्ठता; व्रज का सौभाग्य; ब्रह्मा का प्रस्थान; कृष्ण का साथियों के पास लौटना; और क्यों व्रज ने कृष्ण को सबके आत्मा के रूप में प्रेम किया, इस पर उपदेश
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 14, श्लोक 1-61
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (संस्कृत-हिन्दी, खण्ड 2)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

तेरहवें अध्याय में ब्रह्मा ने कृष्ण की शक्ति परखने के लिए ग्वालबालों और बछड़ों को चुरा लिया; प्रभु एक वर्ष तक स्वयं वे सब बन गए, और लौटने पर ब्रह्मा को असंख्य चतुर्भुज विष्णुओं का दर्शन हुआ जिसने उनका अभिमान विसर्जित कर दिया और उन्हें नन्हे ग्वाल के चरणों में रोता छोड़ दिया। यह अध्याय तब अर्पित उनकी स्तुतियों को अंकित करता है।

ब्रह्मा अपनी स्तुति आरम्भ करते हैं

हाथ जोड़े और काँपती वाणी से उठकर ब्रह्मा अपने सम्मुख प्रभु की स्तुति करने लगे — किसी बालक को सम्बोधित करते हुए महान् स्रष्टा के रूप में नहीं, अपितु अपने स्वामी के चरणों में गिरे एक सेवक के रूप में। उन्होंने उस बालक को प्रणाम किया जिसका वर्ण नवीन मेघ जैसा था, जो बिजली-सा पीत वस्त्र पहने, सिर पर मोरपंख और गुंजा का आभूषण, गले में वनमाला, हाथ में भोजन का कौर, छड़ी-सींग-बाँसुरी जिसकी शोभा के चिह्न, और चरण नवीन पल्लव-से कोमल — एक गोप का पुत्र। यह रूप, उन्होंने कहा, भौतिक नहीं, अपितु प्रभु की अपनी इच्छा से बना है, भक्त को अनुग्रहीत करने प्रकट हुआ; और इसकी महिमा मन से भी नहीं मापी जा सकती।

फिर ब्रह्मा ने वह सत्य कहा जो भागवत के मर्म में बसा है — कि जो बुद्धि के समस्त प्रयासों से अजेय हैं, वही प्रभु उनके द्वारा जीत लिए जाते हैं जो तर्क का अभिमान त्यागकर केवल सन्तों के मुख से उनकी महिमा को विनम्रता से सुनते और नमन करते हुए जीते हैं।

ज्ञाने प्रयासमुदपास्य नमन्त एव
जीवन्ति सन्मुखरितां भवदीयवार्ताम् ।
स्थाने स्थिताः श्रुतिगतां तनुवाङ्मनोभि-
र्ये प्रायशोऽजित जितोऽप्यसि तैस्त्रिलोक्याम् ॥ ३ ॥

jñāne prayāsam udapāsyā namanta eva jīvanti san-mukharitām bhavadiya-vārtām sthāne sthitāḥ śruti-gatām tanu-vāṅ-manobhir ye prāyaśo 'jita jito 'py asi tais tri-lokyām

अर्थ: जो तर्क से आपको जानने के परिश्रम को त्यागकर, अपने ही स्थान पर स्थित रहते हुए, शरीर, वाणी और मन से केवल आपको प्रणाम करते और सन्तों के मुख से आपकी कथा को सुनते हुए जीते हैं — हे अजेय, उनके द्वारा आप जीत लिए जाते हैं, यद्यपि आप तीनों लोकों से अजेय हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 14, श्लोक 3)

शुष्क ज्ञान से ऊपर भक्ति

जो प्रेममयी भक्ति का मार्ग त्यागकर केवल निराकार ज्ञान के लिए परिश्रम करते हैं, ब्रह्मा ने कहा, उन्हें अपने श्रम के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता, जैसे अन्न की आशा में खाली भूसा कूटने वालों को। किन्तु असंख्य योगी, अपना हर कर्म प्रभु को अर्पित कर और उनकी कथाओं के श्रवण से भक्ति पाकर, सहज ही उनके परम धाम को प्राप्त हुए। उनकी महिमा मापी नहीं जा सकती; सबके कल्याण के लिए अवतरित प्रभु के गुणों को गिनने की अपेक्षा पृथ्वी के परमाणु गिनना सरल है। और तब ब्रह्मा ने सच्चे भक्त की सनातन परिभाषा दी — वह जो अपने पूर्वकर्मों के फल रूप में जो कुछ आए उसे धैर्य से स्वीकार करता है, प्रभु को अपना हृदय, वाणी और शरीर अर्पित करता रहता है, और उनकी कृपा की दृढ़ आशा में जीता है।

तत्तेऽनुकम्पां सुसमीक्षमाणो
भुञ्जान एवात्मकृतं विपाकम् ।
हृद्वाग्वपुर्भिर्विदधन्नमस्ते
जीवेत यो मुक्तिपदे स दायभाक् ॥ ८ ॥

tat te 'nukampām su-samīkṣamāṇo bhuñjāna evātma-kṛtām vipākam hṛd-vāg-vapurbbhir vidadhan namas te jīveta yo mukti-pade sa dāya-bhāk

अर्थ: जो सदा आपकी कृपा की ओर देखते हुए, अपने ही पूर्वकर्मों के फल को धैर्य से भोगता है, और अपने हृदय, वाणी तथा शरीर से आपको प्रणाम करता हुआ जीता है — वही मुक्ति के धाम का न्यायसंगत उत्तराधिकारी है। (स्कन्ध 10, अध्याय 14, श्लोक 8)

ब्रह्मा अपनी भूल स्वीकार करते हैं

फिर ब्रह्मा ने खुलकर अपनी भूल स्वीकार की। 'हे अनन्त, मेरी मूर्खता देखिए: कि आपके, माया के ही स्वामी, सम्मुख मैंने आपकी शक्ति देखने के लिए अपनी तुच्छ माया फैलाने का साहस किया — मानो जिस अग्नि से चिनगारी उत्पन्न हुई, उसी को चिनगारी दिखाई। रजोगुण से उत्पन्न, अज्ञानी, स्वयं को पृथक् स्वामी मानने वाले मुझे क्षमा करें।' उन्होंने एक ही अण्ड-ब्रह्माण्ड में सात बित्ते के अपने शरीर की तुच्छता पर आश्चर्य किया, उस प्रभु की महिमा के आगे जिनके रोमकूपों से असंख्य ब्रह्माण्ड परमाणुओं की भाँति निकलते हैं। यह स्मरण करते हुए कि वे स्वयं प्रभु की नाभि-कमल से उत्पन्न हुए थे, उन्होंने समझा कि कृष्ण साक्षात् नारायण, समस्त प्राणियों के आत्मा हैं। और उन्होंने स्वीकार किया कि प्रभु ने उसी दिन उन्हें अपनी माया पूर्णतः दिखा दी थी।

अद्यैव त्वदृतेऽस्य किं मम न ते मायात्वमादर्शित-
मेकोऽसि प्रथमं ततो व्रजसुहृद्वत्साः समस्ता अपि ।
तावन्तोऽसि चतुर्भुजास्तदखिलैः साकं मयोपासिता-
स्तावन्त्येव जगन्त्यभूस्तदमितं ब्रह्माद्वयं शिष्यते ॥ १८ ॥

*adyaiva tvad ıte ʼsya kiṁ mama na te māyātvam ādarśitam eko ʼsi prathamam tato vraja-suhṛd-
vatsāḥ samastā api tāvanto ʼsi catur-bhujās tad akhilaıḥ sākaṁ mayopāsītās tāvanty eva jaganty
abhūs tad amitaṁ brahmādvayaṁ śiṣyate*

अर्थ: आज ही आपने मुझे अपनी माया की शक्ति दिखा दी: पहले केवल आप ही थे; फिर आप समस्त ग्वालबाल-मित्र और बछड़े बन गए; फिर आप उतने ही चतुर्भुज रूप बन गए, जिन्हें मैंने समस्त प्राणियों सहित पूजा; फिर आप उतने ही ब्रह्माण्ड बन गए — और अब पुनः केवल आप ही शेष हैं, वह अमेय, अद्वितीय परम ब्रह्म। (स्कन्ध 10, अध्याय 14, श्लोक 18)

व्रज का सौभाग्य

स्वीकारोक्ति से ब्रह्मा लालसा की ओर मुड़े। उन्होंने न शक्ति माँगी न पद; उनकी एक ही प्रार्थना थी कि किसी भी योनि में — गोकुल में एक झाड़ी या पशु के रूप में भी — प्रभु के भक्तों में गिने जाएँ, ताकि वे उन कोमल चरणों की सेवा कर सकें।

तदस्तु मे नाथ स भूरिभागो
भवेऽत्र वान्यत्र तु वा तिरश्चाम् ।
येनाहमेकोऽपि भवज्जनानां
भूत्वा निषेवे तव पादपल्लवम् ॥ ३० ॥

*tad astu me nātha sa bhūri-bhāgo bhave ʼtra vānyatra tu vā tiraścām yenāham eko ʼpi bhavaj-
janānām bhūtvā niṣeve tava pāda-pallavam*

अर्थ: अतः हे नाथ, मेरा यही परम सौभाग्य हो — इस जन्म में, या किसी अन्य में, या पशुओं में भी — कि आपके भक्तों में से एक बनकर मैं आपके कोमल चरण-कमलों की सेवा करूँ। (स्कन्ध 10, अध्याय 14, श्लोक 30)

उन्होंने ब्रज की उन गौओं और गोपियों को धन्य कहा जिनका स्तन-दूध प्रभु ने आनन्द से पिया, और जिनके सौभाग्य की बराबरी बड़े-बड़े यज्ञ भी नहीं कर सकते। और तब उन्होंने वह श्लोक कहा जिसे तब से भक्तजन हृदय में सँजोए हैं — नन्द और ब्रजवासियों के सौभाग्य का विस्मय, जिनके आत्मीय मित्र स्वयं सनातन, परमानन्दमय परम ब्रह्म हैं।

अहो भाग्यमहो भाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम् ।

यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ॥ ३२ ॥

*aho bhāgyam aho bhāgyam nanda-gopa-vrajaukasām yan-mitraṁ paramānandaṁ pūrṇam
brahma sanātanam*

अर्थ: अहो, महान् सौभाग्य! अहो, नन्द गोप और ब्रजवासियों का महान् सौभाग्य, जिनके प्रिय मित्र स्वयं पूर्ण, सनातन परम ब्रह्म हैं, परमानन्द के आगार! (स्कन्ध 10, अध्याय 14, श्लोक 32)



ब्रह्मा ब्रज की गौओं और गोपजनों को परम भाग्यशाली कहते हैं, क्योंकि सनातन परम ब्रह्म स्वयं उनके अपने मित्र और लाला बन गए हैं (श्लोक 31-32)।

ब्रह्मा का समर्पण और प्रस्थान

ब्रह्मा ने स्वीकार किया कि वे और इन्द्रियों के अन्य अधिष्ठाता देव — यहाँ तक कि स्वयं शिव — बार-बार अपनी इन्द्रिय-रूपी प्यालों से प्रभु के चरण-कमलों के मधु-अमृत का पान करते हैं; और गोकुल में एक तृण के रूप में भी जन्म लेना, इन मुकुन्दमय जीवन वाले ब्रजवासियों के चरणों की धूलि से सिंचित होकर, परम सौभाग्य होगा। जब तक लोग प्रभु के अपने नहीं होते, उन्होंने कहा, तब तक राग आदि उन्हें चोरों की भाँति लूटते हैं, घर एक कारागार है, और मोह चरणों की बेड़ी है। यह घोषित करते हुए कि उनके मन, शरीर और वाणी प्रभु की महिमा को कभी नहीं

पा सकते, ब्रह्मा ने विदा माँगी: ‘आप सब जानते और देखते हैं; आप लोकों के स्वामी हैं, और यह जगत् आपको अर्पित है।’ फिर कृष्ण को यदुओं के आनन्द, पृथ्वी-देव-ब्राह्मण-गौओं के पोषक, और अधर्म के नाशक के रूप में स्तुति करते हुए उन्होंने अपना अन्तिम प्रणाम अर्पित किया।

समाश्रिता ये पदपल्लवप्लवं

महत्पदं पुण्ययशो मुरारे: ।

भवाम्बुधिर्वत्सपदं परं पदं

पदं पदं यद् विपदां न तेषाम् ॥ ५८ ॥

samāśritā ye pada-pallava-plavam mahat-padam puṇya-yaśo murāreḥ bhavāmbudhir vatsa-padam param padam padam padam yad vipadāṁ na teṣām

अर्थ: जिन्होंने मुरारि के चरण-कमलों की नौका का आश्रय लिया है — वे चरण जो समस्त महिमा और पवित्र यश के धाम हैं — उनके लिए संसार-सागर बछड़े के खुर के गड्ढे के जल जितना छोटा हो जाता है; वे उस परम धाम को प्राप्त होते हैं जहाँ पग-पग पर विपत्तियाँ नहीं मिलतीं। (स्कन्ध 10, अध्याय 14, श्लोक 58)



स्तुति अर्पित करने के पश्चात् ब्रह्मा कृष्ण की तीन बार परिक्रमा करते हैं, उनके चरणों में प्रणाम करते हैं, और अपने हंस पर अपने धाम को लौट जाते हैं (श्लोक 41-42)।

कृष्ण अपने साथियों के पास लौटते हैं

इस प्रकार प्रभु की स्तुति कर ब्रह्मा ने उनकी तीन बार परिक्रमा की, उनके चरणों में प्रणाम किया, और अपने धाम को लौट गए। कृष्ण, स्रष्टा से विदा लेकर, बछड़ों को तट के ठीक उसी स्थान पर ले आए जहाँ उनके साथी प्रतीक्षा कर रहे थे। यद्यपि पूरा एक वर्ष बीत चुका था, बालकों ने प्रभु की माया के कारण यही माना कि केवल आधा क्षण बीता है — क्योंकि जब माया के वश में सारा जगत् निरन्तर अपने ही स्वरूप को भूलता रहता है, तब माया-मोहित बालक क्या-क्या न भूलेंगे?



यद्यपि पूरा एक वर्ष बीत चुका है, कृष्ण की माया के कारण बालकों को यह आधा क्षण मात्र लगता है; वे उन्हें भोजन के लिए वापस बुलाते हैं, 'एक कौर भी नहीं खाया, आओ और खाओ!' (श्लोक 43-45)।

‘तुम इतनी जल्दी लौट आए!’ बालकों ने उन्हें पुकारा। ‘हममें से किसी ने एक कौर भी नहीं खाया — आओ, हम सब साथ मिलकर खाएँ।’ मुस्कुराते हुए कृष्ण ने उनके साथ भोजन किया, और फिर मार्ग में उन्हें अजगर अघासुर की सूखी खाल दिखाते हुए वे वन से ब्रज लौटे। मोरपंखों, वन-पुष्पों और चमकीली धातुओं से सजे शरीर से, बाँसुरी बजाते हुए, जबकि साथी उनकी महिमा गाते थे, वे गोपियों के नेत्रों के लिए एक उत्सव बनकर गोशाला में प्रविष्ट हुए; और बालक ब्रज में गाने लगे कि उनके नन्हे मित्र ने एक महान् सर्प को मारा है।



मोरपंखों, फूलों और रंगीन धातुओं से सजे शरीर से, बाँसुरी बजाते हुए, जबकि साथी उनकी महिमा गाते हैं, कृष्ण गोशाला में प्रवेश करते हैं — गोपियों के नेत्रों के लिए एक उत्सव (श्लोक 46-47)।

ब्रज ने कृष्ण को अपने आत्मा के रूप में क्यों प्रेम किया

तब राजा परीक्षित ने पूछा कि ब्रजवासी कृष्ण के प्रति — जो उनकी दृष्टि में दूसरे का पुत्र था — अपने बालकों से भी अधिक प्रेम कैसे अनुभव कर सके। शुकदेवजी ने एक गूढ़ उपदेश से उत्तर दिया। हर देहधारी के लिए, उन्होंने कहा, सबसे प्रिय वस्तु अपना आत्मा ही है; पुत्र, धन और घर उसी आत्मा के लिए ही प्रिय होते हैं। किन्तु कृष्ण समस्त आत्माओं के आत्मा हैं; वे यहाँ अपनी माया से, मानो कोई देहधारी हों, जगत् के कल्याण के लिए प्रकट हुए हैं। इसीलिए ब्रज का प्रेम उनकी ओर किसी अन्य वस्तु से अधिक प्रबलता से बहा, क्योंकि उन्हें प्रेम करने में वे अपने ही हृदय के अन्तरतम आत्मा को प्रेम कर रहे थे। जो सचमुच जानते हैं, शुकदेवजी ने कहा, उनके लिए समस्त चराचर प्रभु का ही रूप है, और उनसे पृथक् कुछ भी नहीं है; कृष्ण समस्त सत् के सार और लक्ष्य हैं। और जो उनके चरणों का आश्रय लेते हैं, उनके लिए जन्म-मृत्यु का विशाल सागर सहज ही पार करने योग्य एक गड्ढा बन जाता है।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् तर्क से नहीं, भक्ति से जीते जाते हैं। ब्रह्मा घोषित करते हैं कि अजेय प्रभु उनके द्वारा जीत लिए जाते हैं जो तर्क त्यागकर केवल उन्हें सुनते और नमन करते हैं (श्लोक 3)। उनकी महिमा का विनम्र श्रवण वह करता है जो समस्त बुद्धि नहीं कर सकती।
2. सच्चा भक्त जीवन को कृपा रूप में स्वीकार करता है। जो अपने कर्मों के फल को धैर्य से भोगता है और प्रभु को हृदय, वाणी, शरीर अर्पित करता रहता है, वही मुक्ति का उत्तराधिकारी है (श्लोक 8)। भक्ति केवल भाव नहीं, जीने की रीति है।
3. हमारी सारी शक्ति उन्हीं की है, उधार ली हुई। अपनी माया से प्रभु को परखने का ब्रह्मा का प्रयास अग्नि को चिनगारी दिखाने जैसा था (श्लोक 9-18)। परम के आगे हर प्राणी की शक्ति और अभिमान विलीन हो जाते हैं।
4. सबसे बड़ा सौभाग्य उनके भक्तों का संग है। ब्रह्मा गोकुल में पशु रूप में भी प्रभु के भक्तों के बीच जन्म की प्रार्थना करते हैं (श्लोक 30-32)। भगवान् से प्रेम करने वालों के निकट होना किसी भी स्वर्ग से बड़ा सौभाग्य है।
5. भगवान् उस हर वस्तु के आत्मा हैं जिसे हम प्रेम करते हैं। ब्रज कृष्ण को अपने बालकों से भी अधिक प्रेम करता है क्योंकि वे समस्त आत्माओं के आत्मा हैं (श्लोक 49-55)। सही अर्थ में समझा जाए तो समस्त प्रेम उन्हीं का प्रेम है।

एक भक्तिमय चिन्तन

ब्रह्मा समस्त सृष्ट प्राणियों में सर्वाधिक बुद्धिमान् और शक्तिशाली, ब्रह्माण्ड के ही रचयिता हैं — और यह अध्याय उन्हें हाथ में भात का कौर लिए एक नन्हे बालक के चरणों में रोते हुए दिखाता है, केवल यह प्रार्थना करते हुए कि जहाँ वह बालक प्रेम किया जाता है वहाँ एक तृण के रूप में ही जन्म लें। समस्त शास्त्रों में सच्ची विनम्रता का इससे बड़ा चित्र नहीं। ब्रह्मा के अभिमान को किसी शक्ति-प्रदर्शन ने नहीं, अपितु एक सत्य की झलक ने तोड़ा: कि जिन प्रभु को उन्होंने परखने का प्रयास किया, वे समस्त के आत्मा, गोपों के मित्र, हर प्रेम के विषय हैं। उनकी प्रार्थना हमें सिखाती है कि सच्चा ज्ञान कहाँ समाप्त होता है — भगवान् को ज्ञान से वश में करने में नहीं, अपितु प्रेम से उन्हें समर्पित होने में, और सबसे बढ़कर उन्हें प्रेम करने वालों के संग की लालसा में। यदि ब्रह्माण्ड के स्रष्टा ने ब्रज के छोर पर सेवा को ही अपना परम सौभाग्य माना, तो हम भी हर महत्वाकांक्षा को छोड़कर वही एक वस्तु माँग सकते हैं जो माँगने योग्य है: भक्तों के बीच एक छोटा स्थान, और अपने सिर पर प्रभु के चरणों की धूलि।

एक दैनिक भक्ते-अभ्यास

आज ब्रह्मा की प्रार्थना को अपनी बना लें। प्रभु से सफलता या राहत माँगने के बजाय केवल भक्ति और उनके भक्तों का संग माँगें — कि आप, चाहे कितने ही विनम्र रूप से, उन्हें प्रेम करने वालों में गिने जाएँ। जब जीवन कठिनाई लाए, तब उसे श्लोक 8 की भावना से ग्रहण करें, अपने पूर्वकर्मों के फल रूप में और प्रभु को अपना हृदय, वाणी तथा शरीर अर्पित करने के अवसर रूप में, उनकी कृपा की प्रतीक्षा करते हुए। आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

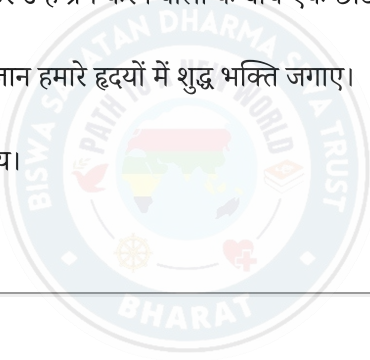
उपसंहार

दशम स्कन्ध का यह चौदहवाँ अध्याय हमें ब्रह्मा की स्तुति देता है — एक ऐसी स्तुति जिसमें ब्रह्माण्ड के स्रष्टा, बालक-प्रभु की महिमा से विनम्र होकर, हमें भक्ति का सम्पूर्ण विज्ञान सिखाते हैं। वे शुष्क ज्ञान से ऊपर प्रेममय समर्पण को श्रेष्ठ बताते हैं, स्वीकार करते हैं कि उनकी अपनी शक्ति परम के आगे कुछ नहीं, और केवल प्रभु के भक्तों के चरणों में सेवा की प्रार्थना करते हैं, ब्रज के उन गोपों के असीम सौभाग्य पर विस्मित होते हुए जिनके मित्र सनातन ब्रह्म हैं। उनके प्रस्थान पर कृष्ण अपने प्रतीक्षारत साथियों के पास लौटते हैं, जिनके लिए एक वर्ष क्षण भर के समान बीता, और सबके आनन्द के लिए पुनः ब्रज में प्रवेश करते हैं। और शुकदेवजी ब्रज के प्रेम का रहस्य प्रकट करते हैं: कि कृष्ण समस्त के आत्मा हैं, अतः उन्हें प्रेम करना हर वस्तु के अन्तरतम हृदय को प्रेम करना है। हम विनम्र स्रष्टा से सीखें कि प्रभुत्व नहीं, समर्पण खोजें, और समस्त सौभाग्यों से बढ़कर उन्हें प्रेम करने वालों के बीच एक छोटे स्थान को सँजोएँ।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (संस्कृत-हिन्दी, खण्ड 2), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), चतुर्दश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-14-brahma-offers-prayers-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञानम् • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

